>

Title: * Issue regarding pension schedules for old age and widows.

CHAUDHARY LAL SINGH: Sir, I am also very much serious about that.

महोदय, आप जानते हैं कि एक इंसान जो लेबरर रहे, किसान रहे या बुनकर रहे और एक व्यक्ति सरकारी तौर पर इंप्लॉइ रहे तो उनमें बहुत फर्क होता है। एक आदमी यदि सरकार की नौकरी न करे तो जब तक उस आदमी की जवानी है, तो उसके परिवार की ज़िन्दगी का सफर बड़े अच्छे ढंग से गुज़रता है लेकिन ज्यों ही वह आदमी बूढ़ा हो जाता है तो उसके लिए मुश्किलें आती हैं। सरकार ने उसके नाम पर एक ओल्ड एज पैंशन रखी है, ऐसे ही डिसेबल्ड और विडो के लिए रखी है। मेरा कहने का मकसद है कि जब उस आदमी को दवाई की ज़रूरत है, उसको अपने गुज़ारे के लिए पैसे की ज़रूरत है और उस समय उसका शरीर भी गिर रहा है, उस समय उसको जो पैंशन सरकार देती है, वह 150 रुपये, 300 रुपये है। वह पैंशन भी उन विधवा औरतों को और डिसेबल्ड परसन्स को और बुज़र्ग आदमियों को 9-10 महीने से न मिल रही हो तो आप उनकी हालत सोच सकते हैं। नौ महीने हो गए गवर्नमैंट ऑफ इंडिया के सोशल वैलफेयर डिपार्टमैंट से उनको पैंशन नहीं मिली। मैं जम्मू कश्मीर में कल मीटिंग कर रहा था तो सारे बुजुर्ग और विधवा औरतें चिल्ला रहे थे कि नौ महीने से हमें पैंशन नहीं मिली। मैं जनाब से कहना चाहता हूँ कि नये केस तो बनाने हैं और पुराने जो चल रहे हैं, उनको पैंशन नहीं मिल रही है। मैं फिर कहना चाहता हूँ कि उनकी सोशल सिक्यूरिटी का सवाल है, उनकी ज़िन्दगी का सवाल है, वे बेचारे रो रहे थे। उन गरीबों का वहाँ कौन है? मेरी आपके माध्यम से गवर्नमैंट ऑफ इंडिया से विनती है कि मेहरबानी करें और उनकी जो पैंशन रोककर रखी है, वह उनको दें। फर्दर यह पैंशन एनहैन्स करनी चाहिए। आज एक आदमी का 300 रुपये से गुज़ारा नहीं हो सकता। इसलिए उनको कम से कम 2000 रुपये पैंशन मिलनी चाहिए और गवर्नमैंट ऑफ इंडिया को एक कानून-कायदा बना देना चाहिए कि जैसे दूसरे देशों में बुजुर्ग, विधवा और डिसेबल्ड गुज़ारा करते हैं, उसी ढंग से हिन्दुस्तान के बुजुर्ग भी इज्ज़त की ज़िन्दगी जी पाएँ। यही मेरी आपके आगे रिक्वैस्ट है।